तारकेश्वरी 'सुधि'

जयपुर, राजस्थान

गीत

मूकदर्शक लोग हैं यूँ ,चल रहा जैसे तमाशा ।

हर जगह पर फ्लैशलाइट, है मगर दिल में अँधेरा।
हाथ जो आगे बढाएँ, भय लगाता एक फेरा।
टूटता विश्वास पल में, बढ़ रही मन में हताशा ।

एक घर में घर अलग हैं, साथ हैं लेकिन पराए।
हाथ गैरों का पकड़ कर ,चाह अपनों को हराए।
लालसा का लोचनों में, छा रहा सबके कुहासा।

थक रहे हैं, लड़ रहे हैं ,युद्ध सब अपना अकेले।
भीड़ है चारों तरफ पर, सह रहे तन्हा झमेले।
है तलब हो साथ ऐसा, दे खुशी हरकर निराशा ।